मुंशी केवलराम जी की बटेश्वर की हवेली:

श्रीमती अनूपा देवी (Smt. Anoopa Devi Saxena), जिनको सभी प्यार से दाई (Dai or Daai) कहा करते थे, वह श्री दरबारी लाल सक्सैना जी की पत्नी (Shri Darbari Lal Saxena Ji (Old Vijay Nagar Colony, Agra)) और मुंशी केवलराम जी (Munshi Kevalram Ji) (जो कि बटेश्वर (Bateshwar, Uttar Pradesh) के महाराजा भदावर (Bhadawar Kings) के राज्य में लगान वसूली के लिए नियुक्त थे) की पुत्री थीं। मुंशी केवलराम जी की सात पुत्रियां और दो पुत्र थे। उनके पुत्र और पुत्रियों के सही नाम तो ज्ञात नहीं हैं, लेकिन उनकी तीन पुत्रियों के कहलावे वाले नाम (जो कि उन्हें प्यार से या घर के लोगों द्वारा बुलाया जाता था) वह स्पष्ट है: 1) कम्मो (Kammo, Bareilly, Uttar Pradesh) (विवाह के बाद बरेली रहा करती थीं), 2) दिन्नो (Dinno, Janta Colony, Jaipur) (जनता कॉलोनी, जयपुर), 3) मथुरावाली (Mathurawali, Balkeshwar, Agra, Uttar Pradesh) (बल्केश्वर, आगरा) और दोनों भाई थे:
1) मथुराप्रसाद सक्सैना (Mathura Prasad Saxena), 2) जयंतीप्रसाद सक्सैना (घासी) (Jayanti Prasad Saxena)

मुंशी केवलराम जी की एक भव्य हवेली (grand mansion) है, जो कि बटेश्वर (Bateshwar, Uttar Pradesh) में यमुना नदी के तट (on the bank of river Yamuna) पर 101 महादेव मंदिरों के आगे बनी है, और इसका एक दरवाज़ा यमुना नदी में आयी बाढ़ में बह गया था, यहीं सातो बहने और दोनों भाई रहा करते थे। इसमें किले की तरह सैनिकों के हवेली के ऊपर खड़े रहने के लिए स्थान है, जहाँ से सैनिक मुंशी केवलराम जी की हवेली की सुरक्षा करते थे। प्रत्येक भाई-बहन का अपना एक कक्ष था। अनूपा जी (दाई), जिस कमरे में रहती थी उसकी खिड़की से यमुना नदी का दृश्य स्पष्ट दिखता था। आज भी उनके कमरे से यमुना नदी का वही सुन्दर नज़ारा देखा जा सकता है। इसके अलावा कई नौकर-चाकर भी उनकी सुख सुविधा के लिए थे। सभी बहनो के विवाह के पश्चात और भाइयों के स्वर्गवास के बाद मुंशी केवलराम जी के नौकर ही इस हवेली में रहने लगे। इसी हवेली में कुछ समय कन्या पाठशाला (Girls School) भी खोली गयी थी। वर्तमान में यह हवेली अस्तित्व में है तथा यहाँ मुंशी केवलराम जी के नौकर के पुत्र रह रहे हैं।

मेरे पिताश्री, माताश्री और बहन सन 1987 या 1988 के आस पास बटेश्वर की हवेली घूम के आ चुके हैं। जब उन्होंने वह रह रहे मुंशी केवलराम जी के नौकर के बच्चों को अपना परिचय दिया तो वो पहचान गए और उन्होंने आव-भगत (स्वागत) भी किया। बटेश्वर में उन्हें अनूपा जी की एक बचपन की सहेली भी मिलीं। मेरे पिताश्री ने जब उन्हें अपना परिचय दिया कि वो अनूपा जी के पौत्र (पुत्र के पुत्र) हैं तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने अपने बचपन के किस्से भी मेरे पिताश्री, माताश्री और बहन को सुनाये। उस समय अनूपा जी भी जीवित थीं, तो जब मेरे पिताश्री ने उन्हें उनकी बाल्यकाल (बचपन) की सहेली के विषय में बताया तो वो भी बेहद खुश हुयीं कि आज भी बटेश्वर-वासी और उनके पिताश्री के यहाँ कार्यरत नौकरों की संतानें उन्हें भूली नहीं हैं।

दिन्नो जी (जनता कॉलोनी, जयपुर) का अभी जनवरी में शायद इकतीस (31 January 2014) को स्वर्गवास हुआ है। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दें।

---

http://authormayanksaxena.blogspot.com/2013/07/the-saxena-family-tree.html